पेपर - 1, खंड – I (विषय: भारत का आधुनिक इतिहास और संस्कृति)

विशेष आलेख: कर्पूरी ठाकुर के राजनीतिक और सामाजिक विचार

(लेखन: संतोष कश्यप, निदेशक- बिहार नमन ग्रुप)

भूमिका

पूरे बिहार में जितने भी सामाजिक क्रांतिकारी हुए हैं, उनमें **भारत रत्न** सम्मान प्राप्त **जननायक कर्पूरी ठाकुर** ने 'बिहारी समाज' के प्रक्षेप पथ को आकार देने, समकालीन सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और पिछड़ी जाति की स्थिति में सुधार करने वाले आंदोलन को प्रज्वलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कर्पूरी ठाकुर के व्यक्तित्व में दूरदर्शिता, साहस और नवीनता का मिश्रण था जिसने उनके दिमाग को **'मुक्त'** किया। उनके दिमाग की मुक्ति ही थी कि उन्होंने समाज के हासिए पर खड़े दलित और पिछड़ी जातियों के लिए अधिक न्याय संगत समाज की मांग की। वे बिहार के प्रथम क्रांतिकारी विचारक थे जो ताउम्र बिहार के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए प्रयास करते रहे और जब उनके अधिकार क्षेत्र में इन परिवर्तनों को करने की बारी आई तो उन्होंने किया भी। इन्होंने 20वीं सदी के बिहारी समाज में तर्क और विवेक के माध्यम से सामाजिक बदलाव हेतु **'आत्म सम्मान'** का आंदोलन चलाया जिसके परिणामस्वरूप बिहार के पिछड़े और दलित समूह में समानता और बंधुत्व की चेतना का विकास हुआ। राष्ट्रीय स्तर पर हिंदू धर्म की वर्ण आश्रम व्यवस्था और इसके संस्कारों में शामिल दलितों, वंचितों की मुक्ति के प्रयास जारी थे जिसका नेतृत्व कई गैर-ब्राह्मण नेता कर रहे थे। ठीक इसी समय में बिहार में इसकी कमान कर्पूरी ठाकुर ने अकेले संभाला। उन्होंने अपने तरीकों से बिहारी समाज के दलित-पिछड़े समुदायों को सम्मान से जीने और समाज में बराबर अधिकार पाने का रास्ता सफलतापूर्वक दिखाया। आज बिहारी जीवन में आधुनिकता का जो रूप है, उसमें निर्णय का **प्रस्थान बिंदु** कर्पूरी ठाकुर की क्रांतिकारी विचारों से आरंभ होता है।

प्रारंभिक जीवन

कर्पूरी ठाकुर का जन्म **24 जनवरी 1924** को बिहार के **समस्तीपुर** जिला के एक छोटे से गांव **पितौंझिया** (अब कर्पूरीग्राम) में हुआ था। उनकी माताजी का नाम श्रीमती रामदुलारी देवी और पिताजी का नाम श्री गोकुल ठाकुर था। इनके पिता इसी गांव के सीमान्त किसान थे तथा अपने परिवार का लालन-पालन, छोटे स्तर पर खेती और पशुपालन करके करते थे। साथ ही इनके पिताजी अपने पारंपरिक पेशा बाल काटने का काम भी करते थे। बचपन में ही कर्पूरी को अपने परिवार में ऐसा वातावरण मिला जो जातीय, सांप्रदायिक भावनाओं तथा अन्य पूर्वाग्रहों से अछूता था। उनमें देशभक्ति की प्रबल भावना उनके परिवार की ही देन थी। बचपन से ही कर्पूरी ठाकुर असहाय, जरूरतमंदों तथा दु:खी लोगों के प्रति पूरी सहानुभूति रखते थे। पितौंझिया में ही उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की और यहीं पर मात्र 14 साल की उम्र में उन्होंने **''नवयुवक संघ''** की स्थापना की। इसके बाद गांव में ही **'होम विलेज लाइब्रेरी'** के लाइब्रेरियन का पद संभाला। बाद में कर्पूरी ठाकुर ने 1940 ईस्वी में मैट्रिक की परीक्षा पटना विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी में पास की। पटना विश्वविद्यालय बिहार का एक ऐसा स्थान था जो राष्ट्रीय और समूचे बिहार की राजनीति का केंद्र बिंदु माना जाता था। इस कारण से कहीं पर कुछ भी राजनीतिक घटनाएं घटित होती तो पटना विश्वविद्यालय में उसकी खबर सबसे पहले पहुंच जाया करती। ऐसी ही एक घटना **1942 का भारत छोड़ो आंदोलन** था जो, यद्यपि राजनीति से प्रेरित था परंतु इसका उद्देश्य सामाजिक था। तो भला समाजवादी कर्पूरी ठाकुर इस सामाजिक क्रांति में कैसे न कूदते? वे अपनी पूरी ऊर्जा के साथ भारत छोड़ो आंदोलन की इस लड़ाई में कूद पड़े और अंग्रेजों को बहुत क्षति पहुंचा। परिणामस्वरुप इन्हें गिरफ्तार करके **26 महीने** तक **भागलपुर** के **कैंप जेल** में रखा गया जहां इन्हें जेल में विभिन्न प्रकार की यातनाएं दी गई। जब वे 1945 में रिहा हुए, तब तक उनकी ख्याति राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच चुकी थी। **जयप्रकाश नारायण कर्पूरी ठाकुर को अपना शिष्य मानते थे**। इसलिए **1948** में **आचार्य नरेंद्र देव** एवं **जयप्रकाश नारायण** के **समाजवादी दल** में कर्पूरी ठाकुर को प्रादेशिक मंत्री बनाया गया। 1952 में भारतीय गणतंत्र के प्रथम आम चुनाव में ही वे **समस्तीपुर के ताजपुर विधानसभा क्षेत्र** से मात्र **31 वर्ष** की आयु में निर्वाचित हुए और फिर किसी चुनाव में कभी नही हारें।

सन् 1967 के आम चुनाव में कर्पूरी ठाकुर के नेतृत्व में **संयुक्त समाजवादी दल (संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी)** (संसोपा) एक सशक्त राजनीतिक पार्टी के रूप में स्थापित हुआ। **22 दिसंबर 1970** (से 2 जून 1971 तक) को वे बिहार के **पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री** बने। मुख्यमंत्री बनते ही उन्होंने जो 2 सबसे महत्वपूर्ण काम किया, वह था -(1) **1970 में बिहार में पहली बार पूर्ण शराबबंदी लागू करना** और (2) **मुंगेरीलाल आयोग की सिफारिश को बिहार राज्य में लागू करना। मुंगेरीलाल आयोग की सिफारिश में कहा गया था कि पिछड़े वर्गों के लिए कोटा लागू किया जाए और पिछड़े वर्ग में भी कुछ ऐसी जातियां थी जो बहुत ही ज्यादा दयनीय स्थिति में थी, उन्हें सर्वाधिक पिछड़ा वर्ग अर्थात ईबीसी के रूप में सूचीबद्ध किया गया।** उन्होंने इन दोनों कामों को किया।

1973-77 में वे लोकनायक जयप्रकाश के छात्र-आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़ गए। 1977 में बिहार के समस्तीपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से सांसद बने। इसी बीच **24 जून, 1977** (21 अप्रैल 1979 तक) को **वे दोबारा बिहार के मुख्यमंत्री** बने। फिर 1980 में बिहार में मध्यावधि चुनाव हुआ तो कर्पूरी ठाकुर के नेतृत्व में लोक दल बिहार विधानसभा में मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरा और कर्पूरी ठाकुर बिहार विधानसभा में मुख्य विपक्षी दाल के नेता बने। **17 फरवरी, 1988** को दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गयी।

आइए, अब हम कर्पूरी ठाकुर के आंदोलन और **चिंतन पर केंद्रित विचारों का अध्ययन** करते हैं:

(**नोट:** यदि आपसे प्रश्न में यह पूछा जाए की कर्पूरी ठाकुर के विचार वर्तमान समय में **कितना प्रासंगिक हैं?** तो भी इसका उत्तर नीचे दिए गए विभिन्न विचारों को समायोजित करते हुए दिया जा सकता हैं)

कर्पूरी ठाकुर के विचार

- **शिक्षा पर विचार**
- **लोकतंत्र पर विचार**
- **समाजवाद पर विचार (स्वरुप: 2)**
- **राजनीति पर विचार**
- **आधुनिकता पर विचार**
- **नारीवाद पर विचार**
- **आर्थिक विचार**
- **समाजवाद पर विचार (स्वरुप: 1)**
- **धर्म और आध्यात्म पर विचार**
- **जाति प्रथा एवं आरक्षण पर विचार**
- **धर्मनिरपेक्षता पर विचार**

- **शिक्षा पर विचार:** कर्पूरी ठाकुर के अनुसार स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा का माध्यम **क्षेत्रीय भाषा** होनी चाहिए क्योंकि यह बच्चों के सीखने को ज्यादा सुग्राह्य बनाता है। अंग्रेजी, जो हमारी भाषा नहीं है, सिखाने में कई साल खर्च करना समय की बर्बादी है। इतना समय बिताने के बावजूद भी हम इस भाषा में महारत हासिल नहीं कर पाते हैं। जो लोग अंग्रेजी जानते हैं वे सोचने लगते हैं कि वे दूसरों से भिन्न हैं। ये लोग परजीवी हैं. अंग्रेजी भाषा ने बुद्धिजीवियों और आम आदमी के बीच एक खाई पैदा कर दी है। इसलिए, जीवन के सभी क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग किया जाना चाहिए। उन्हें अदालतों, बाजार और जीवन के सभी क्षेत्रों में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उनके अनुसार शशिक्षा का अर्थ कुछ परीक्षाएं पास कर लेना मात्र ही नहीं होता, बल्कि सभी समस्याओं पर तर्क पूर्वक विचार करने के योग्य बनना होता है। वह **सर्वांगिक विकास** के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य घटक मानते थे। विशेषकर उनका मानना था कि स्त्रियों, दलितों और पिछड़ों का उत्थान केवल योजना निर्माण से नहीं बल्कि उनमें शिक्षा के प्रसार से ही संभव हो सकता है। इसलिए उन्होंने दलित, पिछड़ी जातियों और सभी वर्गों की महिलाओं के लिए शिक्षा उत्थान पर विशेष बल दिया। शिक्षा को और सर्वसुलभ बनाने के उद्देश्य से उन्होंने मैट्रिक परीक्षाओं के लिए अंग्रेजी को अनिवार्य विषय के रूप में हटा दिया। साथ ही शराब के दुरुपयोग से उत्पन्न सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने न केवल शराब के सेवन पर प्रतिबंध लागू किया बल्कि इसकी जागरूकता के लिए बिहार के गाँव-गाँव में शैक्षणिक नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन करवाया।
- **आर्थिक विचार:** कर्पूरी ठाकुर का आर्थिक विचार किसान और मजदूरों की मेहनत से जुड़ा हुआ है। वे किसान और मजदूरों को देश के उत्पादन व्यवस्था की रीढ़ मानते थे। उनका मानना था कि उनके श्रम के कारण ही भारत और बिहार आज इतना समृद्ध है। लेकिन उनकी ही दशा इस राज्य में और देश में बहुत ज्यादा खराब है। इसलिए उन्होंने, उनकी दशा को सुधारने के नीतियों को स्वीकार

किया। इसके लिए उन्होंने सार्वजनिक वित्त को कुशलतापूर्वक संयोजित करते हुए खर्च करने, कुएं, तालाब, नहर, कृषि ज्ञान तथा सार्वजनिक क्षेत्र में निवेश करने के विचारों का समर्थन किया। कर्पूरी ठाकुर के अनुसार देश में आर्थिक विकास की ऐसी प्रक्रिया होनी चाहिए जो सबसे पिछड़े लोगों की ओर सबसे पहले ध्यान दें। देश में किसी भी प्रकार की आर्थिक विकास की शुरुआत इन्हीं लोगों

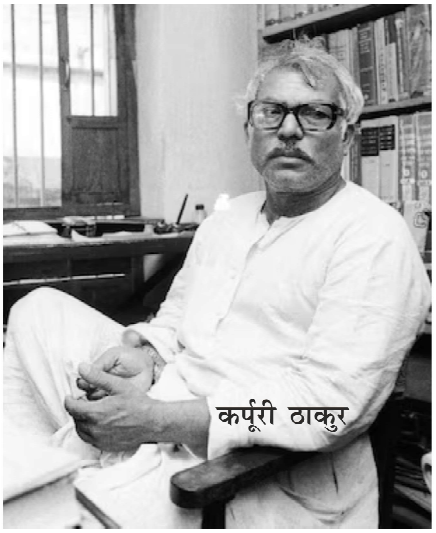
कर्पूरी ठाकुर

के विकास से करनी चाहिए जो उपेक्षा के शिकार है। वह ग्रामीण स्तर पर लघु उद्योग और कुटीर उद्योग तथा अन्य हस्तकला निर्मित उद्योगों की स्थापना के समर्थन में थे। ग्रामीण क्षेत्रों में उपजाई जाने वाली विभिन्न प्रकार के फसलों, फलों तथा अनाजों की बिक्री स्थानीय स्तर पर विकसित किए गए **'हाटो एवं बाजारों'** के माध्यम से ही की जानी चाहिए जिससे कि स्थानीय स्तर के श्रमिक और मजदूरों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके और इसका पूरा लाभ किसानों को प्राप्त हो सके। अपने कार्यकाल में उन्होंने सरकारी अनुबंधों में लगभग **8,000 बेरोजगार इंजीनियरों** के लिए पक्के रोजगार का प्रबंध किया जिससे उनकी सेवाएं आर्थिक उन्नति में भी ली जा सके।

- **लोकतंत्र पर विचार:** कर्पूरी ठाकुर लोकतंत्र के प्रबल समर्थक थे। वे लोकतंत्र को नैतिक आधार पर मजबूत करने पर जोर देते थे। उनके शब्दों में **"लोकतंत्र की मूल समस्या यह है कि लोगों में नैतिकता का पतन हो रहा है।"** उनका कहना था कि जब तक लोगों में नैतिक तथा आध्यात्मिक गुणों का विकास नहीं होगा, तब तक कितनी भी अच्छी राजव्यवस्था तथा संविधान क्यों न हो, लोकतंत्र सही ढंग से कार्य नहीं कर सकेगा। वे लोकतंत्र के लिए सदा यह कहा करते थे कि लोगों में सत्य के प्रति आस्था होनी चाहिए, दूसरों के मतों के प्रति सहिष्णुता भाव होना चाहिए, उत्तरदायित्व की भावना होनी चाहिए, साधारण जीवन में विश्वास होना चाहिए, किसी भी रूप के हिंसा का त्याग करना चाहिए तथा अहिंसा का समर्थन करना चाहिए, सभी की स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहिए तथा उसमें उसकी गहरी आस्था होनी चाहिए, सबों में आपसी सहयोग की भावना होनी चाहिए। यह कुछ ऐसे शर्ते थे जो कर्पूरी ठाकुर के अनुसार एक लोकतंत्र के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है। कर्पूरी ठाकुर लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर लागू करना चाहते थे जिसमें **पार्टी प्रणाली को स्वीकृत सिद्धांतों पर बनाया जाना चाहिए न कि दलबदल पर**। परिस्थिति चाहे जैसी भी हो दल-बदल को खत्म किया जाना चाहिए और अड़ियल तथा दागदार प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का प्रावधान होना चाहिए। यह सभी राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी है कि वह एक साथ बैठकर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में जो भी दोष एवं अवगुण है, देखें और उसे मिलकर दूर करें। वर्तमान लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था से दोषों एवं अवगुणों को दूर किया जाना चाहिए। लोकतंत्र को सुरक्षित बनाने के लिए जनशक्ति को स्वीकार करना होगा अन्यथा यदि लोकतंत्र का दुरुपयोग किया जाता है तो लोगों का भविष्य बर्बाद हो जाएगा।
- **समाजवाद पर विचार (स्वरुप: 1) :** कर्पूरी ठाकुर का समाजवाद एक नई अवधारणा और दर्शन पर आधारित था। वह पारंपरिक अर्थों में समाजवादी नहीं थे। **उन्होंने मार्क्सवाद और कम्युनिस्ट का सर्वाधिक विरोध किया**। वह चाहते थे कि भारतीय समाजवादी आंदोलन मार्क्सवादी विचारों और कार्यों से मुक्त हो जहां हिंसा और घृणा आदि भाषा प्रयोग होता था। वह अहिंसा के गांधीवादी सिद्धांत से प्रभावित थे। साथ ही राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण के द्वारा लोकतंत्र पर दिए गए विचारों का भी उनपर गहरा प्रभाव था। उन्होंने गांधीवादी और मार्क्सवादी अवधारणाओं के बीच एक संश्लेषण लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। उन्होंने समाजवादी दल

को पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ सबसे प्रभावी हथियार बनाने के लिए कार्यवाही का एक नया प्रयोजन और पद्धति देने में योगदान दिया। कर्पूरी ठाकुर ने समाजवाद को लोगों के लिए समानता और समृद्धि के रूप में परिभाषित किया। उनके उदाहरण के अनुसार यदि समाजवाद को दो शब्दों में परिभाषित किया जाना है तो वह सामान्य और समृद्धि ही हो सकता है। बिहार जैसे क्षेत्र में, जो 1960 और 70 के दशक में जाति व्यवस्था एवं छुआछूत से गहरे रूप से जकड़ा हुआ था, यह व्यवस्था कर्पूरी ठाकुर के लिए सबसे ज्यादा पीड़ादायी था। वह कैसे भी करके बिहार में समाजवादी व्यवस्था को लागू करना चाहते थे और वह हमेशा सोचते थे कि हम अपने बिहार में समानता और समृद्धि को एक साथ कैसे लेकर आए। कर्पूरी ठाकुर ने अपने समूचे जीवन काल में विपन्नता, गरीबी की चरम सीमा और समरूप असमाज के पहलू को देखा था जो एक गहरी सामाजिक विभाजन रेखा से लिपटा हुआ था। कर्पूरी ठाकुर उत्पादकता और कम आय के कारण खो रहे समाजवादी विचारधारा से हमेशा चिंतित रहते थे। इसलिए *उन्होंने समाजवाद की स्थापना के लिए सबसे पहले दलितों, पिछड़ों तथा स्त्रियों के कल्याण के लिए प्रयास किया।*

- **समाजवाद पर विचार (स्वरुप: 2) :** कर्पूरी ठाकुर का समाजवाद जयप्रकाश नारायण के समाजवाद से प्रेरित हैं। उनके अनुसार **"समाजवाद एक व्यक्तिगत आचरण संहिता न होकर सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है तथा सामाजिक संगठन का उद्देश्य यह है कि पद-संस्कृति एवं अवसर की विषमताओं को दूर किया जाय, जीवन की श्रेष्ठ वस्तुओं के कष्टमय असमान वितरण को समाप्त किया जाय और उस दशा को समाप्त किया जाय जिसमें अधिकांश व्यक्ति गरीबी, भूख, गंदगी, रोग एंव अज्ञान का जीवन बसर करते हैं और कुछ थोड़े से लोग आराम, संस्कृति, पद और सत्ता का आनंद उठाते हैं।"** कर्पूरी ठाकुर चाहते थे कि उत्पादन-साधनों के व्यक्तिगत स्वामित्व और स्वतंत्र उद्योग पर आधारित वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के स्थान पर उत्पादन साधनों पर राजकीय नियंत्रण और स्वामित्व की नवीन सामाजिक व्यवस्था लाई जानी चाहिए और यह तभी संभव है जब शासन सूत्र समाजवादियों के अधिकार में हो। दूसरे शब्दों में कर्पूरी ठाकुर अपने इच्छित आर्थिक एवं सामाजिक पुनर्निर्माण के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह आवश्यक मानते थे कि समाजवादी शासन तंत्र पर अपना अधिकार जमाए। एक समाजवादी मनीषी के रूप में कर्पूरी ठाकुर को राजनीति के आर्थिक आधारों पर का स्पष्ट ज्ञान था। वे समाजवाद को सामाजिक, आर्थिक पुनर्निर्माण का एक संपूर्ण सिद्धांत मानते थे। वे भूमि कर को घटाने तथा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थे। दक्षिण भारत से शुरू हुए **भू-दान आंदोलन** को वह बिहार में भी लागू करना चाहते थे। इसके लिए वे भूमिहीनों की समस्या को सुलझाने के लिए बिहार में पद यात्राएं भी की। वे भूमि वितरण की समीक्षा को अहिंसात्मक साधनों द्वारा हल करने के पक्ष में थे। जब वे बिहार के मुख्यमंत्री बने तब उन्होंने इस दिशा में अनुकरणीय काम भी किया। यह उनकी लगन का ही प्रतिफल था कि उनके द्वारा शुरू किए गए इस पदयात्रा से भूपतियों में चेतना आई तथा इससे भूमिहीनों में बहुत अधिक जागरण भी हुआ। वे इस सामाजिक एवं बौद्धिक क्रांति की बागडोर नवयुवकों को सौपना चाहते थे। वे चाहते थे कि गांव को स्वायत्त तथा स्वावलंबी बनाया जाए।
- **धर्म और आध्यात्म पर विचार:** कर्पूरी ठाकुर की धर्म और आध्यात्म पर गहरी आस्था थी लेकिन वह इस पर आंख बंद करके भरोसा नहीं करते थे और न ही इसे सर्वोपरि मानते थे अन्य विचार को की तरह तत्कालीन भारतीय समाज और धर्म के प्रति कर्पूरी ठाकुर भी भी सोचते रहे और उनके सोच और कर्म में यह देखने को मिला कि वे ईश्वर के बारे में रूढिघ्वादी मान्यताओं में कम ही विश्वास रखते थे, यहाँ तक कि वे ईश्वर अस्तित्व को भी मानने से इंकार करते रहे लेकिन जब ध्यान से हम उनके चरित्र का अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि उन्हें अन्तर्भूत विराट शक्तियों से कभी इंकार नहीं था। इसका प्रमाण एक घटना से मिलता है। **21 अगस्त 1984** को बिहार विधानसभा में कर्पूरी ठाकुर भाषण दे रहे थे। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि **'बाबाधाम (देवघर) जाने से बिहार की तरक्की नहीं हो जाएगी। मैं नहीं कहता की पूजा नहीं की जाए, आध्यात्म की तरफ लोग नहीं जाए (स्वयं डॉक्टर अंबेडकर भी कहा करते थे कि हर इंसान को भौतिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक भाव की भी जरूरत पड़ती है) लेकिन कोई बेटा - बेटी के लिए बाबाधाम जाए, चार गाय (मन्नत मांगने के बाद पूरा होने पर) हो जाए तो जाए तो उससे कुछ होना जाना नहीं है।'** कर्पूरी ठाकुर के उक्त वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि वह धर्म के खिलाफ नहीं थे। लेकिन अगर आपको अपने दिनचर्या की समस्या से निजात पाना है तो उसके लिए भौतिक हल ही निकलना होगा। सिर्फ आध्यात्मिकता के बदौलत

समाधान नहीं होगा। अर्थात आपको अपनी सफलता के लिए, अपनी प्रगति के लिए किसी भी हालत में मेहनत करनी होगी। उनका चरित्र नास्तिकता की ओर अधिक झुका था लेकिन देश के अद्‌भुत सांस्कृतिक फलक के साथ उनका तादात्म्य सदैव बना रहा। वह देश और बिहार की राजनीति में धर्म के घाल मेल के सदैव विरुद्ध थे।

- **राजनीति पर विचार:** कर्पूरी ठाकुर का राजनीतिक विचार था कि राज्य में प्रत्येक प्रकार की कुरीतियों, अराजकता और भ्रष्टाचार का विरोध करना चाहिए। इसमें शासन के अधिकारियों का व्यवहार व न्यायविदों के अन्याय भी शामिल है। संघर्ष के साधनों में उन्होंने सत्याग्रह, कर न देना, मतदाताओं को शिक्षित करना, आदि को सम्मिलित किया है। यदि शासन इन गतिविधियों में शामिल नहीं हो रहा है और जनता को राहत नहीं दे रहा है तो जनता को अपने से संबंधित मामलों का प्रबंध अपने हाथ में ले लेना चाहिए। अर्थात जनता को स्वयं सरकार का निर्माण करना चाहिए। यह लोकतंत्र के लिए भी सही है। राजनीतिक लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक है कि राज्य पर जनता की निर्भरता यथासंभव कम से कम हो। महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स दोनों के अनुसार लोकतंत्र की सर्वोच्च स्थिति वह होगी जिसमें राज्यों का लोप हो जाए। उनका मानना था कि राजनीतिक लोकतंत्र में एक विरोधी दल का होना आवश्यक है। उन्होंने सदा ही समाज सेवा को राजनीति से ऊपर रखा।

  वर्तमान भारतीय राजनीति में पूंजी का बड़ा खेल है। कर्पूरी ठाकुर इसके खिलाफ थे। राजनीति में कर्पूरी ठाकुर **3 C (Cash, Caste and Crime)** के खिलाफ थे। वे सरकारों के पूंजीवादी चरित्र के मुखर विरोधी थे। **18 दिसंबर 1980** को उन्होंने बिहार विधानसभा में एक प्रस्ताव में कहा था कि **'देश की पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए जो सरकार पूंजीवाद में जन्मी है, जो मालदार लोगों को मालदार बनाना चाहती है, वैसी सरकार को मिटाना आवश्यक है।'** वह महंगाई के जिम्मेदार कारणों में इसी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को मानते हुए कहते हैं कि सभी जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के अभाव को दूर करने के लिए कोई उपाय निकाला जाए और इसमें एक उपाय यह भी निकले कि पूंजीवादी सरकार को खत्म करके नई अर्थव्यवस्था वाली सरकार को स्थापित करने का प्रयास कैसे किया जाए।

  उन्होंने दलीय राजनीति की कड़ी आलोचना करते हुए कहा **'राजनीति, नेतागिरी को जन्म देती है, राजनीतिक नैतिकता को दबाती है तथा विवेक हीनता, कपट आचरण और षडयंत्र को बढ़ावा देती है।'** अपने राजनीतिक यात्रा में उन्होंने यह देखा कि राजनीतिक दल- बदल राजनीतिक भ्रष्टाचार की जड़ है। राजनीतिक दल-बदल के कारण देश ने राजनीतिक पतन का शर्मनाक तमाशा देखा है। विधायकों की खरीद-बिक्री का बाजार जोर- शोर से चल चला है। इसका मुख्य लालच मंत्री पद और पैसा रहा हैं। इस गंदी चालबाजी से राजनीतिक आचार संहिता, दलीय पद्धति का औचित्य, राजनीतिक दलों की विश्वसनीयता और सबसे बड़ा नुकसान भारतीय लोकतंत्र को हुआ है जिसका हिसाब लगाना कठिन है। उनका मानना था कि जहां एकता की आवश्यकता है वहां दलों द्वारा विवाद खड़े किए जाते हैं और जहां मतभेदों को न्यूनतम करना चाहिए वहां वह उनको अतिरंजित करते हैं। कर्पूरी ठाकुर दलगत राजनीति को जनता की असहनीय स्थिति का सबसे बड़ा कारण मानते थे क्योंकि दलगत राजनीति समाज में नैतिक पतन, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। बहुसंख्यक शक्ति दल शक्ति अपने हाथ में लेकर लोकतांत्रिक शासन के स्थान पर स्वेच्छाचारी शासन को बढ़ावा देते हैं। जनता को सुशासन के झूठे आश्वासन, भुलावे में डाल दिया जाता है। जन सामान्य की वास्तविक कठिनाइयों का निराकरण नहीं किया जाता। सत्ता लोलुप राजनीतिक तत्वों द्वारा सार्वजनिक हित के नाम पर अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति की जाती है। यह स्थिति कर्पूरी ठाकुर के समय भी थी और वर्तमान समय की राजनीति में भी देखने को मिलता है। हाल ही में 2024 की बिहार की राजनीति में सत्ता परिवर्तन और इसके लिए किये गए जुगाड़ इस बात का प्रमाण है कि कर्पूरी ठाकुर कितने दूरदर्शी थे। उनके द्वारा कही गई एक-एक बात आज भी बिहार की राजनीति में लागू हो रहा है।

- **जाति प्रथा एवं आरक्षण पर विचार:** कर्पूरी ठाकुर जाति प्रथा के सख्त खिलाफ थे एवं आरक्षण के प्रबल समर्थक थे। वे जाति प्रथा को समाज का कलंक मानते थे तथा यह स्वीकार करते थे कि समाज में जो विभिन्न प्रकार की समस्याएं मौजूद हैं, उसका मूल कारण जाति प्रथा ही है। उनका यह भी मानना था कि यदि आर्थिक विषमता किसी भी उपाय से समाप्त हो जाए तो जातिगत भेदभाव और गरीबी स्वत: समाप्त हो जाएगी। इस बिंदु पर कम्युनिस्ट और समाजवादी विचारधारा में समानता है। कर्पूरी ठाकुर ने जाति

को जड़ वर्ग की संज्ञा दी है क्योंकि जाति की जकड़ ने बिहार और भारत के सामाजिक जीवन को प्राण रहित कर दिया है। इस संबंध में कर्पूरी ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि 'जीवन के बड़े-बड़े तत्व शादी ,भोज, विवाह और सभी रस्में जाति के चौखट में ही होती है। ऐसे मौके पर दूसरी जाति के लोग किनारे पर रहते हैं। जाति प्रथा के कारण ही निम्न वर्ग का खूब शोषण होता है। जाति उन्हें उन्नति के अवसरों से अलग रखती है। बिहार में जाति प्रथा की अनेकों कहानियाँ उदाहरण है जिस कारण से दलित तथा पिछड़ी जातियां आज भी शोषण के शिकार है। कर्पूरी ठाकुर के जाति तोड़ो पर चिंतन, उनकी सामाजिक क्रांतिकारिता को दर्शाती है। जाति का कटघरा भारतीय और बिहारी समाज के केवल व्यक्तिक पसंद या नापसंद से नहीं टूटने वाला। इसको तोड़ने के लिए संगठन, सरोकार और समर्पण की आवश्यकता है। वह जातियों के जातिवादी संगठन के समर्थक नहीं थे। राजनीति में जाति के अद्भुत प्रयोगकर्ता के रूप में कर्पूरी ठाकुर ने विभिन्न जातियों को संगठित होने का लक्ष्य दिया। **1970-1980** के दशक में कर्पूरी ठाकुर ने एक बड़ा ही **प्रसिद्ध नारा** दिया **'सोशलिस्टों ने बांधी गाँठ, पिछड़ा पावें सौ में साठ।"** अर्थात वे भारतीय और बिहारी जनसंख्यात्मक संरचना में जातिगत समीकरण के आधार पर पिछड़ों को 100 में से 60% आरक्षण देने के पक्षधर थे। उनके लिए पिछड़ों में आदिवासी, शुद्र एवं पिछड़ी जातियां तथा स्वर्ण की महिलाएं भी शामिल है। जून 1970 में **'कर्पूरी ठाकुर फॉर्मूला'** लागू किया गया जिसमें **26% आरक्षण** का प्रावधान था। इसमें **ओबीसी** के लिए **12%, आर्थिक रूप से पिछड़े ओबीसी** के लिए **8%, महिलाओं के लिए 3**% और **उच्च जातियों के आर्थिक रूप से वंचित** व्यक्तियों के लिए **3**% आरक्षण शामिल था। डॉ0 अम्डबेकर एवं जयप्रकाश नारायण की भांति कर्पूरी ठाकुर ने भी अस्पृश्यता को जाति व्यवस्था का परिणाम माना और उसका विरोध किया। हरिजनों के मंदिर प्रवेश की समस्या के निराकरण के लिए उन्होने बिहार में हरिजन मंदिर प्रवेश आंदोलन चलाया। कर्पूरी ठाकुर ने अस्पृश्यता की भावना के कुपरिणामों का उल्लेख करते हुए कहा कि अस्पृश्यता की भावना के कुपरिणामों का उल्लेख करते हुए कहा कि अस्पृश्यता के कारण न केवल राष्ट्रीय विघटन और अवनति हुई है वरन् इसके परिणामस्वरूप बिहार को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अपमान तथा उपेक्षा भी सहन करनी पड़ी है। यदि हमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी पहचान बनानी है तो हमें अस्पृश्यता निवारण के लिए प्रभावात्मक कदम उठाने होंगे। इस समस्या के निवारण हेतु उनके सुझाव इस प्रकार थे-हरिजनों में स्वाभिमान व निर्भयता की भावना विकसित करना, हरिजनों में शिक्षा का प्रसार, हरिजनों को समान आध्यात्मिक अधिकार प्रदान करना और हरिजनों साथ साथ मानवोचित व्यवहार। कर्पूरी ठाकुर जाति के आधार पर आरक्षण के पक्षधर थे। वे समाज के हासिए पर पड़े समुदायों को मुख्य धारा में लाने के लिए आरक्षण को एक हथियार के रूप में देखते थे। यह कर्पूरी ठाकुर की ही प्रतिबद्धता है कि वर्ष 2023 में बिहार सरकार द्वारा जातिगत जनगणना कराकर समावेशी आरक्षण प्रदान किया गया

- **आधुनिकता पर विचारः** यह कर्पूरी ठाकुर ही थे जिन्होंने तर्क पर आधारित दृष्टिकोणों के समूह के रूप में आधुनिकता के रूप में, भारत जैसे उत्तर-औपनिवेशिक राज्य में विकास की अनिवार्यता को समझा। भारत में लोकतंत्र के उदय के साथ-साथ, गरीबी हटाने और आम लोगों के लिए बुनियादी जरूरतों की पूर्ति सुनिश्चित करने की बहुत जरूरत थी। गरीबी और अविकसितता को दूर करने के इस क्षेत्र में ही भारत बहुत भौतिक और ठोस अर्थों में आधुनिक बना। उन्होंने वैज्ञानिक तरीके से भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था सुलभ कराने, शिक्षा की व्यवस्था करने, बुनियादी उद्योगों के विकास करने पर बोल दिया। उनका मानना था कि यह आधुनिकता ही है जो बिहार जैसे पिछड़े एवं गरीब राज्य में रोजगार के नए अवसर पैदा करेगा जिससे यहां की गरीबी और असमानता दूर होगी। आविष्कृत आधुनिकता ने बिहार में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी मानव जीवन से जुड़े क्षेत्रों पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा। आधुनिकता ने जितने सुविधा संपन्न प्रभाव छोड़े, उससे कई अधिक जटिल समस्याओं को भी उत्पन्न किया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विज्ञान एवं तकनीक में होने वाली प्रगति ने बिहार के सामाजिक ढांचे को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया। कृषि समाज का स्थान नगरीय औद्योगिक समाज ने ले लिया। जीविका की तलाश में बिहार के लोग बड़े-बड़े उद्योगों की तरफ आने लगे। मानव व्यवहार औद्योगिक अनुशासन से नियंत्रित होने लगा जिससे जीवन में एक यांत्रिक अनियमितता आ गई। शहरों का जीवन अधिक उन्मुक्त किंतु गुमनाम हो गया।

आधुनिकता ने न केवल पारंपरिक सामाजिक ढांचे पर प्रहार किया किंतु पारंपरिक समाज की अतार्किक धार्मिक आस्था पर भी चोट की। कर्पूरी ठाकुर को आधुनिकता से सबसे बड़ा लगाव यह था कि आधुनिकता ने बिहार में पहले से फैले चमत्कार, रहस्य, अंधविश्वास आदि पर से पर्दा उठाया जो बिहार जैसे पिछड़े सामाजिक परिवेश के उत्थान के लिए एक सकारात्मक संकेत था। आधुनिकतावाद में अनास्था का भाव सर्वोपरि है। वह परंपरागत विचारों, प्रतिबद्धताओं, मान्यताओं विश्वासों, मूल्य के प्रति आस्था का भाव प्रकट कर इन्हें चुनौती देता हुआ विद्रोहात्मक स्वर प्रकट करता है। आधुनिकता ऐतिहासिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, वैचारिक, प्रकृति, परंपरा और दमन इत्यादि को किसी भी हाल में स्वीकार नहीं करता। कर्पूरी ठाकुर जब आधुनिकता की बात करते तो वह कहते कि आधुनिकतावाद में आत्मबोध और व्यक्तिकता का भाव प्रमुख है। यह मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता क्योंकि यह मनुष्य को एक खंडित, एकाकी व्यक्ति मात्र में परिवर्तित करके संसार में उसकी इच्छा से पड़े फेंक देता है जिसका ना कोई वर्तमान है, ना कोई सुंदर अतीत और ना कोई उज्जवल भविष्य। एकाकी, खंडित और सहायक मनुष्य ही आधुनिकतावाद का केंद्र बिंदु है।

- **धर्मनिरपेक्षता पर विचार:** कर्पूरी ठाकुर के अनुसार धर्मनिरपेक्षता धर्म और धार्मिक विचारों का बहिष्कार है। एक दर्शन के रूप में, धर्मनिरपेक्षता धर्म का सहारा लिए बिना, केवल भौतिक दुनिया से लिए गए सिद्धांतों पर जीवन की व्याख्या करना चाहती है। राजनीतिक दृष्टि से, धर्मनिरपेक्षता राज्य द्वारा सभी धर्मों के प्रति समान व्यवहार है। एक धर्मनिरपेक्षतावादी किसी भी हठधर्मिता, अंधविश्वास या विश्वास को सिर्फ इसलिए स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि कुछ धर्मग्रंथों से अपना अधिकार प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति कुछ विचारों को अचूक और अपने दिल के लिए प्रिय मानता है। धर्मनिरपेक्षता आचरण और जीवन जीने का एक तरीका है। **'धर्मनिरपेक्षता'** किसी भी धर्म के प्रति तटस्थता है, जिसका अर्थ है कि यह सभी धर्मों को स्वीकार करता है और बहुलवाद का सम्मान करता है। राजनीतिक दृष्टि से, धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि सरकारों को धर्म के मुद्दों पर तटस्थ रहना चाहिए और धार्मिक विकल्पों को लोगों की स्वतंत्रता पर छोड़कर धर्म के मुक्त अभ्यास को लागू या प्रतिबंधित नहीं करना चाहिए। जहां तक भारत राष्ट्र का सवाल है, यह भारत के संविधान के 42वें संशोधन के साथ है जो 1976 में लागू किया गया था, संविधान की प्रस्तावना में कहा गया था कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। वास्तव में इसका मतलब यह है कि देश की सरकार ईश्वरीय नहीं है। धर्मनिरपेक्षता में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की बातें हैं। वे संविधान की तारीफ करते हुए कहते हैं कि संविधान ने अस्थायी भागों के बीच एक संतुलन बनाया है जो इसे एक विशेष धार्मिक आस्था या विश्वास को मानने वाले व्यक्ति तक ही सीमित रखता है और उसे सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य के अधीन अपने धर्म का अभ्यास करने और उसका प्रचार करने की अनुमति देता है। धर्मनिरपेक्षता का सकारात्मक हिस्सा राज्य को कानून या कार्यकारी आदेश द्वारा विनियमित करने के लिए सौंपा गया है। राज्य को किसी विशेष धर्म को राज्य धर्म के रूप में संरक्षण देने की मनाही है और उसे तटस्थता बरतने का आदेश दिया गया है। राज्य अपने लोगों के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास को साकार करने और उन्हें धर्मनिरपेक्ष आधार पर एक तर्कसंगत प्राणी बनाने, व्यक्तिगत उत्कृष्टता, क्षेत्रीय विकास, प्रगति और राष्ट्रीय अखंडता में सुधार करने के लिए पूर्ण आस्था और विश्वास का माहौल सुनिश्चित करने के लिए संतुलन बनाता है। धार्मिक सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता और अनुभागीय या धार्मिक एकता की योजना के रूप में भाईचारा संविधान की बुनियादी विशेषताएं और सिद्धांत हैं। धर्म के आधार पर राजनीतिक दलों द्वारा विकसित कार्यक्रम या सिद्धांत धर्म को राजनीतिक शासन के एक भाग के रूप में मान्यता देने के समान हैं जिसे संविधान स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करता है।

- **नारीवाद पर विचार:** कर्पूरी ठाकुर अपनी बुद्धि, ज्ञान और मुखरता के लिए काफी प्रसिद्ध थे। उन्होंने न केवल राजनीती पर, बल्कि भारतीय समाज के रूढ़िवादी सिद्धांतों और दर्शन पर भी निरंतर सवाल उठाये और बड़ी ही मुखरता से इन बिंदुओं पर अपने विचार रखें। भारतीय और बिहार समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत ही चिंताजनक रही है। *वे जब भी मंचो पर भाषण देते तो हमेशा कहा करते की* **'भारत में पितृसत्ता हमारी मानसिकता के मूल में अंतर्निहित है।'** महिलाओं पर हिंसा फैलाना, उन्हें हीन प्रजाति मानना और उनके साथ दुर्व्यवहार करना लंबे समय से भारतीय समाज की पहचान रही है। प्रारंभिक स्वतंत्रता आंदोलनों में एक सबसे बड़ी कमी यह थी कि यह काफी हद तक गैर-समावेशी था और इसमें प्रमुख रूप से उच्च वर्ग के हिंदू पुरुष शामिल थे। राजनीतिक

आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के खिलाफ एक केंद्रीय तर्क यह था कि उनकी भूमिका को घर के भीतर परिभाषित किया गया था और वे घर के अन्य पुरुष सदस्यों की देखभाल और सेवा से जुड़ी थीं। दूसरी ओर, पुरुषों को उनकी शारीरिक शक्ति और आक्रामकता के कारण नेतृत्व के लिए आदर्श माना जाता था।

कर्पूरी ठाकुर के अनुसार महिलाओं की समाज में भूमिका की ऐसी समझ बहुत पुरातन है और तर्कसंगत समझ पर आधारित नहीं है। उन्होंने लैंगिकता या अलैंगिकता, भावनात्मक या भौतिक मामलों, व्यक्तित्व या सामाजिक भूमिकाओं से संबंधित स्पष्ट विचारों के भीतर लैंगिक बहस को सीमित करने से इनकार कर दिया। वे, हर घर में प्रचलित एवं सामाजिक रूप से स्वीकृत अभ्यासों की निरंतर आलोचना करते रहें। उन्होंने न केवल बाहरी दुनिया में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों के बारे में चर्चा की बल्कि वे हर उस समस्या से चिंतित और प्रभावित थे जिनका महिलाओं को नियमित रूप से सामना करना पड़ा था। जैसे महिलाओं द्वारा रसोई में धुएं से लड़ने हो या लंबी दूरी तक पानी ले जाना हो या फिर परिवार के मर्दों का जूठन खाना हो। **वे द्रौपदी को नारीत्व का सबसे शक्तिशाली प्रतीक मानते थे जिनके पास तेज बुद्धि थी और अपने मन की बात कहने का साहस भी था। उन्होंने यह भी आलोचना की और ध्यान दिलाया कि द्रौपदी का गुस्सा सिर्फ कौरवों के खिलाफ नहीं था, बल्कि उनके पतियों के खिलाफ भी था, जो उन्हें अपनी संपत्ति का एक मूल्यवान टुकड़ा मानते थे।** उनके भाषणों और उनके लेखन से महिलाओं के प्रति उनके अथाह प्रेम, सम्मान और चिंता जाहिर होती है। वे महिलाओं के सौंदर्य के संबंध में खुलकर बोलते थे, चाहे महिला सांवली हो या गोरी, नीची जाति की हो या ऊँची जाति की, मजदूर हो या मालिक। परंतु वे महिलाओं को केवल सौंदर्य की प्रतिमूर्ति नहीं मानते थे। वे उन्हें उत्पादक मनुष्य मानते थे–घर के बाहर भी और घर के अंदर भी। उनका सपना केवल दमन और शोषण का अंत करना ही नहीं था। वे प्रत्येक व्यक्ति की भलाई और सामूहिक प्रसन्नता को बढावा देने के पक्ष में थे। वे एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे जिसमें हर व्यक्ति को अपनी क्षमताओं के अनुरूप उन्नति करने का अवसर मिलेगा और इस तरह एक प्रसन्न और संतुष्ट समाज का निर्माण होगा।

उनकी दृष्टि में एक प्रसन्न दुनिया वह थी जिसमें लैंगिक न्याय और लैंगिक समानता हो और जो अंततः लैंगिकता–मुक्त हो जाए। कर्पूरी ठाकुर कहां करते कि नारी तत्कालीन संस्कृति का आदर्श है क्योंकि वह परिवार एवं समाज के सभी कर्तव्यों का पालन करके संसार रूपी रथ को अग्रसर करने में पुरुष का साथ देती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान की अधिकारणी एक सक्षम व्यक्तित्व संपन्न नारी को आधुनिक समय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त होना चाहिए। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जब बिहार से महिलाओं ने अपनी सहभागिता दी तब उन्होंने उनकी गतिविधियों को विस्तार दिया। स्त्रियों के दमन, शोषण तथा दोयम दर्जे की मान्यता देने वाली रुढ़िवादी मान्यताओं और धार्मिक सत्ता पर कर्पूरी ठाकुर ने प्रश्न उठाए थे। उन्होंने विवाह के समय लड़की की सहमति को आवश्यक माना।

कर्पूरी ठाकुर को अपने राज्य और देश से अगाध प्रेम था और वे इस प्रेम को भारत के जन–जन तक पहुंचाना चाहते थे। वे चाहते थे कि भारत तथा बिहार के प्रत्येक लोग स्वतंत्रता संघर्ष के साथ खसाथ सामाजिक संघर्ष में शामिल हो। इसके लिए उन्होंने एक **कविता** की रचना की, जो इस प्रकार है–

''हम सोए वतन को जगाने चले हैं,

हम मुर्दा दिलों को मिलाने चले हैं,

गरीबों को रोटी न देती हुकूमत,

जालिमों से लोहा बजाने चले हैं,

हमें और ज्यादा न छेड़ो ए - जालिम,

मिटा देंगे जुल्म के ये सारे नजारे,

या मिटने को खुद हम दीवाने चले हैं,

हम सोए वतन को जगाने चले..।''

निष्कर्ष

भारतीय और बिहारी समाज के लिए कर्पूरी ठाकुर ने जाति प्रथा, नर–नारी और असमानता, अस्पृश्यता, सांप्रदायिकता जैसी कुरीतियों पर गहरा प्रहार किया है। उनकी सामाजिक चिंतन ने भारतीय और बिहारी समाज के मस्तिष्क और आत्मा का विकास किया है। आधुनिक भारत के बौद्धिक और राजनीतिक विकास में कर्पूरी ठाकुर का अग्रणी स्थान है। इनको प्यार करने वाले और उनकी प्रशंसा करने वाले यूं तो बिहार में कई लोग हैं लेकिन दु:ख की बात यह है कि उनकी विचारधारा से साम्य रखने वाले लोगों की संख्या बहुत कम है। वह आधुनिक बिहार के उन कुछ विचारकों में से एक है जिन्होंने समाजवाद की एक नई विचारधारा को स्थापित किया जिसे **'स्वदेशी समाजवाद'** के रूप में जाना जाता हैं। हाल के समय में बिहार में जिस प्रकार की राजनीतिक उठा–पटक हो रही है, उसके लिए लोकतांत्रिक सामाजिक दृष्टिकोण उनकी विचारधारा को एक समन्वित परिघटना के रूप में सत्यापित करता हैं। कर्पूरी ठाकुर 20वीं सदी के सबसे प्रेरक, साहसी, सुसंगत और रचनात्मक विचारक थे। **विभिन्न मुद्दों पर उनका चिंतन और विचार आज भी प्रासंगिक है और आने वाली शताब्दियों में भी प्रासंगिक बना रहेगा।**

☆☆☆

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

अभ्यास प्रश्न

1. **'जब कोई राज्य शिक्षा से वंचित हो जाता है, तो यह जाति व्यवस्था के चक्र को आमंत्रित करता है।' इस कथन के आलोक में आधुनिक बिहार में एक सुधारक के रूप में कर्पूरी ठाकुर की भूमिका का परीक्षण कीजिए।**

(अंक: 38, शब्द सीमा: 400 से 500)

2. **समाजवाद और लोकतंत्र पर कर्पूरी ठाकुर के विचारों पर टिप्पणी कीजिए।**

(अंक: 38, शब्द सीमा: 400 से 500)